321hi02

2

दैनिक जीवन में नीतियाँ

हरिओम ने एक नयी मध्यवर्गीय कॉलोनी में एक परचून की दुकान खोली। चूंकि उस नयी कॉलोनी की यह एक मात्र दुकान थी अतः दुकान चल निकली। शीघ्र ही हरिओम को महसूस हुआ कि वह अकेला यह कार्य नहीं कर सकता। उसने अपनी सहायता के लिये व घर–घर सामान पहुंचाने के लिये रामू को नियुक्त किया। एक सप्ताह तो भली–भाँति बीत गया परंतु शीघ्र ही हरिओम ने गौर किया कि रामू काम पर, तथा ग्राहक के घर सामान पहुंचाने के बाद देर से आता है। जब भी हरिओम को उसकी आवश्यकता होती, रामू उसे मिलता ही नहीं। हरि ने रामू को समझाने की हर संभव कोशिश की कि उसे सुधर जाना चाहिये, और समय की कीमत पहचान कर अपने काम पर अधिक ध्यान देना चाहिये। चार महीने बीत जाने पर भी स्थिति सुधरी नहीं। रामू अक्सर चाय की दुकान पर चाय पीता हुआ व खेलता हुआ मिलता। छः महीने तक रामू को सुधारने की असफल कोशिश के बाद हरिओम ने परेशान होकर रामू को निकाल कर नया आदमी रख लिया।

क्या आप भी इस तरह की किसी घटना से परिचित हैं? क्या आप भी इसी तरह के लोगों से दो चार हुए हैं जो अपने काम के प्रति वफादार नहीं हैं? काम के प्रति वफादारी क्यों आवश्यक है? क्यों मालिक अपने कर्मचारी से इतना परेशान हो जाता है कि उन्हें अपने काम से हाथ धोना पड़ता है? इस पाठ में हम आपको ऐसी सभी चीजों से परिचित करायेंगे जो एक अच्छे कर्मचारी बनने के लिये महत्वपूर्ण हैं। यह जानकारी उन लोगों के लिये भी उतनी ही आवश्यक है जो एक परिवार, स्कूल व अपने मित्रों के बीच प्रिय सदस्य बनना चाहते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप निम्न कर सकेंगे:

- नीति शब्द की परिभाषा देना और दैनिक जीवन में घर और काम में नीतियों की जरूरत की व्याख्या करना;
- दैनिक जीवन में आने वाली नीतिगत समस्याओं के विषय में व्याख्या करना;
- दैनिक जीवन में नीतिगत स्तर उठाने के लिये आवश्यक कारकों की सूची बनाना;
- अच्छी जीवन शैली के लिये नीतिगत संकेत विकसित करना।

टिप्पणी

2.1 नीतियाँ क्या हैं?

नीति शब्द नैतिक मुद्दों और सही व गलत व्यवहार से संबधित है।

चित्र 2.1

नीतियाँ हमें हमारे नैतिक कर्त्तव्यों के विषय में बताती हैं ताकि हमारा व्यवहार घर व कार्यक्षेत्र दोनों जगह सही, विश्वसनीय व न्यायप्रिय हो। नीतियाँ नियम व मानकों का समूह है जिनकी किसी भी व्यक्ति से एक संतोषजनक पारिवारिक जीवन निभाने और एक अच्छे कार्यकर्ता बनने के लिये अपेक्षा की जाती है। अतः धर व बाहर आपको नीतियों की आवश्यकता होती है। निम्नलिखित आदतों में आप नीतिगत व्यवहार देख सकते हैं जो आप के व्यवहार में परिलक्षित होते हैं।

- वफादारी व ईमानदारी
- सत्यवादिता
- आत्मसम्मान व अन्य लोगों का सम्मान
- समय का आदर
- कार्य के प्रति सम्मान
- अपने पर्यावरण का सम्मान

हमारे जीवन की इन नीतियों के अतिरिक्त हमारा कार्य क्षेत्र भी हमसे कुछ विशिष्ट नीतियों की अपेक्षा रखता है। ये हैं:

- नियमितता व समय की पाबंदी
- गोपनीयता
- विश्वासपात्रता
- अपने सहकर्मियों व ग्राहकों से मित्रतापूर्ण संबंध रखना
- नयी जिम्मेदारियों का निर्वहन व उन्हें सीखने की इच्छा रखना

2.2 नीतियों की आवश्यकता

आइये देखें कि अच्छी नीतियों का होना क्यों आवश्यक है, और किस प्रकार वे हमारे आपसी संबंधों और कार्यकुशलता को प्रभावित करती हैं।

घर व दफ्तर में किसी भी कार्य स्थिति के तीन घटक होते हैं – कार्य, कार्यकर्ता व कार्य स्थल।

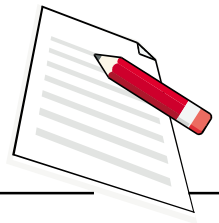

टिप्पणी

- काम ही वास्तविक कार्य है जो किया जाना है।
- कार्य करने वाला वह व्यक्ति है जो कार्य करता है।
- कार्यस्थल वह है जहाँ पर कार्य किया जाता है व जहाँ पर कार्य के लिये आवश्यक औज़ार व उपकरण रखे जाते हैं व उनके भंडारण के लिये आवश्यक स्थान होता है।

आप सहमत होंगे कि ये तीनों घटक आपस में संबंधित हैं व एक दूसरे पर निर्भर होते हैं। इसके अतिरिक्त आप यह भी मानेंगे कि हर स्थिति में कार्य करने वाला ही सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटक है। ऐसा इसलिये है कि केवल कार्यकर्ता में सोचने की, विश्लेषण करने की, सीखने व आवश्यक रद्दो बदल करने की क्षमता होती है। एक कार्यकर्ता अपने व अपने आस–पास के कार्यकर्ताओं के प्रभावशाली प्रबंधन की कला सीख सकता है। वह आलसी, गैर जिम्मेदार व अपने कार्यस्थल का कुप्रबंधक भी हो सकता है और फलतः अपने व्यापार को क्षति पहुंचा सकता है। क्या आपको इस पाठ के प्रारंभ में दिये गये रामू व हरिओम का उदाहरण याद है?

इस प्रकार अपने उद्देश्यों की सफल प्राप्ति के लिये, हमारे संसाधनों के प्रभावशाली उपयोग के लिये व घर व कार्यस्थल पर अनुशासन बनाये रखने के लिये हमें कुछ विशिष्ट कार्यनीतियों को विकसित करने की आवश्यकता होती है। इन कार्य नीतियों के कारण हम किसी भी कार्य को अपनी क्षमतानुसार, साफ, न्यायपूर्ण व पक्षपात रहित तरीके से कर सकते हैं। ये नीतियां हमें सौहार्द्रपूर्ण कार्य का वातावरण विकसित करने के लिये उत्साहित करती हैं, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे के सहारे और भरोसे का आनंद उठा सकता है।

क्रियाकलाप – किसी भी कार्यस्थल (जैसे कोई दफ़्तर, दुकान, पुलिस चौकी आदि) पर जाकर वहाँ की चार नीतिगत और चार नीतिरहित कार्य प्रणाली नोट करें।

पाठगत प्रश्न 2.1

(1) किन्हीं पाँच व्यक्तिगत गुणों की व्याख्या कीजिये जो अच्छी कार्य नीतियों में सहयोग देते हैं।

(a) .... (d) ....

(b) .... (e) ....

(c) ....

(2) नीचे दिये गये कथनों को सबसे उपयुक्त उत्तर द्वारा पूर्ण कीजिये।

(i) कार्य नीति का अर्थ है

(a) नैतिकता

(b) दक्षता

(c) योग्यता

(d) न्यायप्रियता

(ii) कार्य नीति का अर्थ है

(a) नियम व मानकों का समूह

(b) मानकों का समूह

(c) सही निर्णय व मानक

(d) सही निर्णय व नियमों का समूह

(iii) कार्य स्थल के तीन घटक हैं कार्यकर्ता, कार्यस्थल व .....

(a) नियम

(b) कार्य विधि

(c) कार्य

(d) सह कार्यकर्ता

(3) नीचे दी गयी सूची में से साधारण नीतियों को कार्यगत नीतियों से अलग करें।

(a) नियमितता व समय की पाबंदी

(b) वफादारी

(c) नियमितता

(d) विश्वासपात्रता

(e) गोपनीयता

(f) आत्मसम्मान

(g) पर्यावरण के प्रति सम्मान

(h) सत्यवादिता

2.2 पारिवारिक जीवन में नीतिगत समस्यायें

चित्र 2.2: पारिवारिक जीवन में नीतिगत समस्यायें

टिप्पणी

अब तक हमने कार्य नीतियों व उनके महत्त्व के विषय में पढ़ा। आइये, अब आमतौर पर किसी कार्यस्थल पर सामने आने वाली कुछ नीतिगत समस्याओं के विषय में विस्तार से जानें, जहाँ कार्यकर्त्ताः

- अनियमित और समय के पाबंद नहीं होते
- रूखे व कटु होते हैं
- अपर्याप्त ज्ञान रखते हैं
- संसाधनों का अपव्यय करते हैं
- नियम व कानून की धज्जियां उड़ाते हैं
- अपने कार्य का आदर नहीं करते हैं
- वफादार नहीं हैं।

(a) अनियमितता व समय के पाबंद न होना

अनियमितता व समय की पाबंदी न होना ऐसी समस्यायें हैं जिन्हें आप किसी भी कार्य स्थिति में अक्सर देखते हैं। अपने चारों ओर देखें, आपको कई लोग ऐसे मिलेंगे जो सवेरे देर से उठते हैं और अपने बच्चों को स्कूल देरे से भेजते हैं। वे अपने परिवार के सदस्यों को समुचित आहार भी नहीं दे पाते और जिनके अनियमित व्यवहार के कारण व समय की कद्र न करने के कारण, उनके घर भी अव्यवस्थित रहते हैं। ऐसे व्यक्ति अपने कार्य से अक्सर अनुपस्थित रहते हैं। इनमें से अन्य दफ्तर देर से आते हैं व अपना अधिकार समझकर दफ्तर से घर भी जल्दी ही चले जाते हैं। कुछ कार्यकर्ता काम के समय अपने स्थान से ही नदारद रहते हैं। आप भी ऐसी घटनाओं के साक्षी अवश्य रहे होंगे जब बैंक, पोस्ट ऑफिस, टेलीफोन व बिजली दफ्तर के काउन्टर क्लर्क के देर से आने के कारण या स्थान से नदारद रहने के कारण जनता को असुविधा का सामना करना पड़ता है। ऐसे लोगों का ग़ैर ज़िम्मेदाराना व्यवहार कार्य का अनुशासन भंग कर देता है और गलत उदाहरण पेश करता है व साथ ही ऐसा व्यक्ति अपने संगठन की प्रतिष्ठा भी धूमिल कर देता है। जनता को असुविधा का सामना करना पड़ता है।

क्या आप अपनी पढ़ाई में और पाठ के अभ्यास में नियमित हैं? यदि आप अनियमित हैं तो आप अपनी परीक्षा में अच्छा परिणाम प्राप्त नहीं कर पायेंगे और अप्रसन्न रहेंगे। आपको यह भी समझना होगा कि भविष्य में भी यह व्यवहार आपके व्यवसाय के अवसरों को प्रभावित करेगा।

(b) अशिष्ट व अभद्र व्यवहार

कभी–कभी परिवार के कुछ सदस्यों का व्यवहार उग्र व अशिष्ट होता है। ऐसा व्यवहार न केवल पारिवारिक शांति को भंग कर देता है वरन् परिवार की बदनामी का कारण भी बनता है। जब किसी दफ्तर के काउन्टर पर क्लर्क आपकी बातें ठीक से नहीं सुनता और अपनी व्यस्तता का बहाना बनाकर आपको बाद में आने को कहता है, तब आपकी

क्या प्रतिक्रिया होगी? क्या आप अपने ऑफिस में ऐसे किसी सहकर्मी से संबंध रखेंगे जो अपना काम ठीक से नहीं करता, अशिष्ट है, महिलाओं व सहकर्मियों से अभद्र व्यवहार करता है और हमेशा उग्रता दिखाता है किसी कर्मचारी का अशिष्ट व अभद्र व्यवहार किसी भी संगठन के लिये हानिकारक व शर्मिंदा करने वाला होता है।

चित्र 2.3

(c) अपर्याप्त ज्ञान व कुशलता

कई लोग ऐसा दिखाते हैं कि उनके पास लोगों को प्रभावित करने के लिये व अपने व्यवसाय के अवसर बढ़ाने के लिये विशेष योग्यता व ज्ञान है। मान लीजिये, आपके पास कम्प्यूटर है, परंतु आप उसे चलाना नहीं जानते और फिर भी आप उसे चलाने की जिद करते हैं तब यदि कम्प्यूटर खराब हो जाता है तो इसके लिये कौन जिम्मेदार है? कई लोग दावा करते हैं कि वे योग्य डॉक्टर हैं और उन बीमारियों के रोगियों का इलाज करते हैं जिनके विषय में उन्हें कुछ भी मालूम नहीं। परिणामस्वरूप वे रोगी का जीवन खतरे में डाल देते हैं। कई बार कुछ लोग बिजली का काम जानने का दावा करते हैं, जबकि उन्हें बिजली व किसी अन्य मशीन के विषय में कुछ भी जानकारी नहीं होती और उनके कारण बहुत हानि होती है। अतः अपने कार्य के विषय में जानकारी रखना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। किसी भी काम करने वाले को न केवल योग्य व कुशल होना चाहिये बल्कि समय समय पर उसे अपने ज्ञान व योग्यता में वृद्धि भी करते रहना चाहिये। पोषण विज्ञान, घरेलू उपकरण, दवाइयाँ व सफाई सामग्री का अपर्याप्त ज्ञान कई बार घर पर गंभीर दुर्घटना का कारण बनता है। इसके अलावा सुरक्षा व प्राथमिक उपचार की सामग्री के विषय में भी अधूरा ज्ञान कई बार खतरनाक होता है। उदाहरण के लिये बिजली के खुले तार को छूने से आपको झटका लग सकता है यदि आपको ऐसा करने के खतरे के विषय में मालूम न हो। अच्छे पोषण व संतुलित आहार के विषय में जानकारी न होने के कारण आपके परिवार के सदस्यों को रतौंधी, घेंघा आदि पोषक तत्त्वों की कमी से होने वाले रोग हो सकते हैं। इसी प्रकार अपने पाठ को अच्छी तरह से पढ़ने से आपके ज्ञान में वृद्धि होगी, क्रियाकलापों को करने से आपकी योग्यता विकसित होगी।

(d) संसाधनों का अपव्यय

पिछले पाठ में आप पढ़ ही चुके हैं कि हमारे कई संसाधन सीमित हैं। कई गृहणियाँ आवश्यकता से अधिक भोजन पकाती हैं जो बाद में बर्बाद हो जाता है। कई बार समुचित भंडारण न होने से खाद्य पदार्थ खराब हो जाते हैं और उन्हें फेंकना पड़ना है। कुछ लोग अपनी थाली में ढेर सारा भोजन ले लेते हैं और पूरा खाना खा नहीं पाते तो थाली में झूठन छोड़ देते हैं। बिना पूर्व योजना के व बिना शॉपिंग लिस्ट बनाए बार–बार बाजार

जाने से समय व ऊर्जा का अपव्यय होता है और यदि आप बाजार अपने वाहन से जा रहे हैं तो पेट्रोल का खर्चा अलग होता है।

चित्र 2.4

कई दफ्तरों में खाली कमरों में बिजली व पंखे चलते रहने देना एक साधारण बात है। ऑफिस के कागज का दुरूपयोग व उसे आस–पास फेंका जाना तो एक आम दृश्य है। ऑफिस के फोन व वाहनों का व्यक्तिगत कार्यों के लिये दुरूपयोग भी एक आम घटना है। आपने स्वयं भी कई बार देखा होगा कि पानी पीने के बाद लोग नल बंद नहीं करते। यह सब हमारे अमूल्य संसाधनों का दुरूपयोग है।

(e) नियम व कानूनों का उल्लंघन

आपने गौर किया होगा कि कुछ घरों में लड़कों को लड़कियों से ज्यादा मान दिया जाता है। अक्सर माता–पिता किसी एक बच्चे के प्रति अधिक प्रेम प्रदर्शित करते हैं। क्या आपने भी परिवार की लड़की व बहू के प्रति व्यवहार में अन्तर पाया है? कभी–कभी शारीरिक व मानसिक रूप से विकलांग लोगों के साथ दफ्तर व घर में भेदभाव किया जाता है। कुछ लोग परिवार व संस्कृति की अवमानना को आधुनिकता का प्रतीक मानते हैं। क्या आप ऐसे कुछ और उदाहरण दे सकते हैं?

कई कार्यस्थलों पर देखा जाता है कि अनुशासन, अच्छे मालिक एवं कर्मचारी संबंध व सद्भावना आदि बनाये रखने के लिये बनाये गये मानदंडों का उल्लंघन किया जाता है। साधारणतया यह देखा गया है कि समय से पहले पदोन्नतियां दे दी जाती हैं या प्रशासन किसी कर्मचारी के प्रति पक्षपातपूर्ण रवैया अपनाता है। किन्हीं कार्य स्थलों पर लोगों के साथ जाति, लिंग व शारीरिक विकलांगता के कारण भेद–भाव बरता जाता है। महिलाओं को समान काम के लिये पुरूषों की अपेक्षा कम वेतन दिया जाता है। छोटे बच्चों को जोखिम वाले उद्योगों जैसे पटाखे की फैक्टरी या खड़िया के कारखाने में सरकारी नियमों के विरूद्ध भरती किया जाता है जो सरासर गलत है। कुछ छात्र अपना कार्य स्वयं न करके दूसरों से करवाते हैं या दूसरों की नकल करके अपना कार्य पूरा करते हैं। इसके अतिरिक्त परीक्षाओं में नकल करना भी एक साधारण सी बात है। यह भी परीक्षा के नियमों के विरूद्ध है और नीति संगत नहीं है। नियम व कानूनों का उल्लंघन अकसर घर व ऑफिस में गंभीर परिस्थितियां पैदा करता है।

(f) अपने कार्य के प्रति असम्मान

क्या आप ऐसे लोगों से कभी मिले हैं जो अपने कार्य के प्रति शर्मिंदगी महसूस करते हैं और ऐसी बातें करते हैं कि ''ओह! मैं एक तो साधारण गृहणी हूँ, मैं कोई काम नहीं करती'' या फिर ''मैं एक साधारण क्लर्क हूँ।'' आपने सोचा तो अवश्य होगा कि वे क्यों शर्मिंदगी महसूस कर रहे हैं।

टिप्पणी

हमारे समाज में कुछ कार्यों को सम्ममानजनक व कुछ को कम सम्मानजनक, कुछ को ऊँचा व कुछ को नीचा व तुच्छ समझा जाता है। परिणामस्वरूप कई लोग अपने काम से आनंदित होते हुये भी लोगों को अपने काम के विषय में नहीं बताते कि कहीं लोग उन्हें हेय दृष्टि से न देखें। किसी गृहणी द्वारा किये गये घरेलू कार्य के सफल संपादन को परिवार व समाज द्वारा विशेष सम्मान नहीं दिया जाता। इसी प्रकार, सड़क के किनारे पानी बेचने में मनुष्य को गौरव महसूस करना चाहिए तथा राहगीरों को उसे हेय दृष्टि से नहीं देखना चाहिए। सड़क पर प्यासों को पानी पिलाने का कार्य सम्मानजनक है।

गृह विज्ञान विषय के विद्यार्थी के नाते आपको अपने पाठयक्रम का आदर करना चाहिये क्योंकि यह विषय बहुआयामी, व्यावहारिक व व्यवसायिक है। आपने अपने पहले ही पाठ में गृह विज्ञान विषय को पढ़ने का मूल्य समझ लिया होगा।

(g) विश्वासघात

अपने परिवार के भेदों को खोलना और लोगों के सामने परिवार के सदस्यों को बदनाम करना आदि परिवार के प्रति विश्वासघात है। संयुक्त धनराशि में से धन निकालकर अपने स्वार्थ के लिये कुछ कार्य करना भी परिवार से विश्वासघात है।

दफ्तर में कुछ कर्मचारी हानिप्रद गतिविधियों में लिप्त रहते हैं। उदाहरण के लिये एक रासायनिक इंजीनियर कुछ पैसों के लिये अपनी कंपनी का गुप्त फॉर्मूला प्रतिद्वन्दी कम्पनी को बेच सकता है। एक भ्रष्ट यूनियन नेता हड़ताल की घोषणा करके मिल का उत्पादन रोककर मिल को भारी क्षति पहुंचाता है। रिश्वत लेकर कुछ विशेष कम्पनियों को अपनी संस्था की कीमत पर मुनाफा देना आदि आजकल की काफी प्रचलित घटनाएँ हैं। अपने मालिक को धोखा देकर किसी अन्य के लिये काम करना आदि भी विश्वासघात के कुछ उदाहरण हैं।

क्या आप विश्वासघात के कुछ और उदाहरण सोच सकते हैं?

पाठगत प्रश्न 2.2

1. नीचे दिये वक्तव्यों में से जो नीतिगत नहीं हैं उन्हें छाँट कर अलग करें।

   (a) अपने ऑफिस से रिश्तेदारों को एस.टी.डी. कॉल करना।

   (b) बैंक क्लर्क द्वारा काउंटर को समय पर खोला जाना।

   (c) बैंक क्लर्क द्वारा आपको काउंटर दर कांउटर भेजना।

   (d) ऑफिस के वाहन में लॉग बुक भरे बिना पार्टी में जाना।

टिप्पणी

(e) उपयोग के बाद पानी का नल बंद कर देना।

(f) सभी कर्मचारियों द्वारा मिलजुल कर काम करना।

(g) समय से पहले पदोन्नति।

(h) अपना काम करवाने के लिये किसी अधिकारी को रिश्वत देना।

(i) कतार तोड़कर आगे निकल जाना।

2.4 नीतियों की संहिता

पिछले भाग में वर्णित अधिकांश समस्याओं पर काबू पाया जा सकता है। ऐसी सूची जिसमें कुछ नियमों, मानकों और सिद्धांतों का स्पष्ट वर्णन हो, जो घर और सार्वजनिक स्थानों पर हमारे व्यवहार का मार्गदर्शन करे, नीतियों की संहिता कहलाती है। निम्नलिखित कार्यनीतियों की संहिता हम सभी को समझने के लिए तथा कार्य और घर पर कड़ाई से पालन के लिए दी गई है–

- कार्य और घर पर नियमित और सामयिक रहें।
- स्वयं के लिए निर्धारित कार्य को पूरा करें।
- सबके प्रति शिष्ट, धैर्यवान, विनम्र और आदरपूर्ण रहें।
- स्वयं के लिए निर्दिष्ट कार्य के लिए आवश्यक ज्ञान व कौशल को हासिल करें।
- सीखने और जानकारी प्राप्त करने के लिए स्वंय को तैयार रखें।
- अपने कार्य को पूरा करने के लिए अधिक और कारगर उपायों को ढूँढें।
- अपने संसाधनों का प्रबंधन और प्रयोग दक्षता से करें। संसाधनों को बर्बाद न करें।
- अपने कार्य के नियमों, नीतियों और प्रक्रमों का कड़ाई से और समान रूप से पालन करें।
- अपना कर्त्तव्य करते समय पक्षपात और भेदभाव न करें। सभी को एक समान समझें।
- सभी प्रकार के कार्यों के प्रति आदरभाव रखें।
- ऐसे अनुग्रहों को स्वीकार न करें जो आपके कार्य निष्पादन पर नकारात्मक असर डालते हों।
- अपने कार्य व संस्था के प्रति ईमानदार रहें।
- जहाँ पर आपका भ्रष्टाचार से सामना हो उसे प्रकट करें।

आइए आज हम यह शपथ लें कि प्रतिदिन हम इस नीतियों की संहिता का पालन करेंगे।

टिप्पणी

2.5 नैतिक मानकों का स्तर बढ़ाना

दैनिक जीवन में लोगों का नैतिक स्तर ऊँचा उठाने के लिए आप क्या सुझाव दे सकते हैं? अच्छा, नीचे दिए गए सुझावों को पढ़िए और देखिए यदि आप इनसे सहमत हैं।

(a) सार्वजनिक तौर पर प्रकट और प्रचार

अनैतिक और भ्रष्ट कर्मचारियों को उनके कार्यों के प्रति जिम्मेदार ठहराना चाहिए। ऐसे गैर जिम्मेदार लोगों का पर्दाफाश होना चाहिए और उन्हें उचित सजा मिलनी चाहिए। उनके कुछ विशेषाधिकार और सुविधाओं का वापिस लिया जाना उन्हें सुधरने के लिए मजबूर कर सकता है। परिवार के सदस्यों और साथियों के समक्ष उनके गलत कारनामों को लाना उनके लिए सामाजिक शर्मिंदगी बन सकता है। यह अन्य लोगों के लिए भी चेतावनी का काम करेगा।

(b) 'नीति संहिता' बनाना

नीतियों का स्पष्ट निर्धारण और उनका कड़ाई से पालन करना बहुत आवश्यक है। कार्यों के नीति निर्धारण से लोगों को हमारी अपेक्षायें स्पष्ट ज्ञात होती हैं। उदाहरण के लिये यदि किसी संगठन के ऑफिस नोटिस बोर्ड पर नीति संहिता का विवरण लिखा हो तो उनके कर्मचारी उनका अनुसरण भली–भाँति कर सकते हैं। इस प्रकार कर्मचारी नीतिगत अवधारणाओं को अपनी दिनचर्या में लागू कर सकते हैं।

(c) स्कूल व कॉलेजों में नीति और मूल्य शिक्षा

अब तक किसी भी कर्मचारी द्वारा नैतिक शिक्षा स्वयं ही अनुभव द्वारा व एक दूसरे के मार्गदर्शन से ही सीखे जाने की अपेक्षा की जाती थी। आज के तीव्र प्रतिस्पर्धा, चुनौती भरे और बदलते वातावरण में यह अति महत्त्वपूर्ण हो गया है कि प्रत्येक व्यक्ति पूर्णतया प्रशिक्षित व दक्ष हो। तभी हम अच्छी तरह कार्यों का निर्वहन कर सकते हैं और अपने जीवन में प्रगति की अपेक्षा कर सकते हैं। अतः नैतिक मूल्यों व नीतियों की शिक्षा प्रारम्भ से ही हमारे जीवन का हिस्सा बननी चाहिये। इस प्रकार अनुशासित नागरिकों का विकास होगा और अच्छे राष्ट्र का निर्माण होगा। प्रारम्भिक आयु से ही सिखाने का अर्थ है मूल्यों को आदतों में ढालना। और आप तो जानते ही हैं कि पुरानी आदतें देर से ही जाती हैं।

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् क्या आपने नीतियों व नीतियों को व्यवहारगत करने के विषय में जान लिया है? क्या आप नहीं सोचते कि अपने व्यक्तिगत व व्यावसायिक जीवन में सुधार लाने के लिये हमें नीति संहिता का अनुसरण करना चाहिये?

पाठगत प्रश्न 2.3

उचित शब्दों के प्रयोग से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये।

1. अपने काम पर नियमित व ..... रहें।
2. स्वयं को .....और ज्ञान प्राप्त करने वाला बनाने को तैयार रहें।

टिप्पणी

3. अपने कार्य को अधिक ..... बनाने के तरीके ढूंढें।
4. प्रत्येक प्रकार के कार्य के लिये ..... रखें।
5. अपनी संस्था के प्रति .....रहें।
6. अपने कार्यस्थल पर अच्छे प्रदर्शन के लिये ..... का अनुसरण करें।
7. अनैतिक व ..... कर्मचारियों को उनके क्रियाकलापों के लिये जिम्मेदार ठहराना चाहिये।
8. ..... की शिक्षा और नीतियाँ स्कूल व कॉलेज के पाठ्यक्रमों का हिस्सा होनी चाहिये।

आपने क्या सीखा

नीतियों

↓

का अर्थ

↓

नैतिक मुद्दे–सही और गलत व्यवहार

↓

नीतिगत समस्याएँ

- अपने कार्य का अनादर
- अशिष्ट व अभ्रद व्यवहार
- अपर्याप्त ज्ञान तथा कौशल
- नियम व कानूनों का अनादर
- विश्वासघात
- संसाधनों का दुरूपयोग
- अनियमितता और समय की पाबंदी की कमी

↓

सुधारी जा सकती हैं

↓

कार्यनीति संहिता के पालन से

पाठान्त प्रश्न

(1) स्कूलों व कॉलेजों में मूल्य व नीतियाँ क्यों पढ़ाई जानी चाहिये?

(2) आपके भाई को घर पर दूसरों की मदद न करने के बहाने बनाने की आदत है। आप उसको किस प्रकार समझायेंगे कि उसकी यह आदत गलत है?

टिप्पणी

(3) यदि आपको ज्ञात हो जाये कि आपके सहकर्मी ने दफ्तर की गोपनीय सूचना को बाहर प्रकट कर दिया है तब आप क्या करेंगे?

(4) एक विद्यार्थी के रूप में अपने प्रदर्शन को निखारने के लिये आवश्यक नीतिगत आदतों की सूची बनाइये।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1 1. पाठ से पढ़ें।

2. (i) (a) (ii) (a) (iii) (b)

3. साधारण नीतियाँ– (b), (f), (g), (h)

कार्य नीतियाँ – (a), (c), (d), (e)

2.2 (a) (c) (d) (g) (h)

2.3 (1) समय के पाबंद (2) सीखना (3) दक्ष (4) आदर (5) वफादार (6) नीतियों की संहिता (7) भ्रष्ट (8) नैतिक मूल्यों

अधिक जानकारी के लिये देखें
http://www.ethics.org/resources/links